Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (UPPSC)

भारत और विश्व

(भाग-1)

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: UPM05

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (UPPSC)

भारत और विश्व

(भाग–1)

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली–110009
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

UPPCS DLP

विषय सूची (Contents)

1. अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का ऐतिहासिक कालक्रम और प्रमुख घटनाएँ **5-48**

1.1 राष्ट्र-राज्यों का उदय 5

1.2 यूरोप का कॉन्सर्ट अथवा कॉन्ग्रेस सिस्टम 6

1.3 बोल्शेविक क्रांति 8

1.4 प्रथम विश्वयुद्ध 9

1.5 द्वितीय विश्वयुद्ध 9

1.6 राष्ट्र संघ की असफलता एवं संयुक्त राष्ट्र संघ का उदय 12

1.7 संबंधों में विचारधारा का प्रभाव 14

1.8 पूर्वी यूरोप पर सोवियत प्रभाव 18

1.9 अंतर्राष्ट्रीय संधि व्यवस्था 19

1.10 शीतयुद्ध एवं प्रमुख घटनाएँ 20

1.11 सोवियत संघ में संकट, तदनंतर विघटन और शीतयुद्ध का अंत 28

1.12 उत्तर-शीतयुद्ध काल 30

1.13 अंतर्राष्ट्रीय संबंध: महत्त्वपूर्ण शब्दावली 32

2. विदेश नीति और संबद्ध मुद्दे **49-67**

2.1 कूटनीति 49

2.2 विदेश नीति : अर्थ एवं कार्य-क्षेत्र 52

2.3 विदेश नीति का महत्त्व 52

2.4 भारत की विदेश नीति 53

2.5 भारतीय विदेश नीति के आधारभूत सिद्धांत 55

2.6 भारतीय विदेश नीति से संबद्ध महत्त्वपूर्ण संस्थाएँ 61

2.7 भारतीय विदेश नीति की बदलती प्रवृत्ति 63

3. भारत की पूर्व की ओर देखो नीति **68-80**

3.1 पूर्व की ओर देखो नीति द्वारा घोषित उद्देश्यों की प्राप्ति 69

3.2 भारत की लुक ईस्ट पॉलिसी का नया आयाम: एक्ट ईस्ट पॉलिसी 73

3.3 दक्षिण चीन सागर विवाद एवं भारत-आसियान संबंध 75

3.4 भारत की पूर्व की ओर देखो नीति पर भारत-चीन संबंधों का प्रभाव 77

3.5 भारत-आसियान युवा सम्मेलन-2017 78

3.6 निष्कर्ष 79

4. पड़ोसी देशों के साथ भारत के संबंध **81-225**

4.1 भारत-नेपाल संबंध 81

4.2 भारत-पाकिस्तान द्विपक्षीय संबंध 101

4.3 भारत-बांग्लादेश संबंध 126

4.4 भारत-श्रीलंका संबंध 146

4.5 भारत-भूटान संबंध 162

4.6 भारत-अफगानिस्तान संबंध 172

4.7 भारत-चीन द्विपक्षीय संबंध 183

4.8 भारत-म्याँमार संबंध 209

5. भारत-पश्चिम एशिया एवं मध्य एशिया **226-283**

5.1 भारत और पश्चिम एशिया 226

5.2 भारत और मध्य एशिया 276

अध्याय
1

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का ऐतिहासिक कालक्रम और प्रमुख घटनाएँ (Historical Chronology of International Politics & Major Events)

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के विकास का इतिहास ज्यादा प्राचीन नहीं है बल्कि यह विषय बीसवीं शताब्दी की उपज कही जा सकती है। साधारण शब्दों में अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का अर्थ है- राज्यों के मध्य राजनीति करना। यदि राजनीति के अर्थ का अध्ययन करें तो तीन प्रमुख तत्त्व सामने आते हैं- (i) समूहों का अस्तित्व, (ii) समूहों के बीच असहमति तथा (iii) समूहों द्वारा अपने हितों की पूर्ति। अत: अंतर्राष्ट्रीय राजनीति उन क्रियाओं का अध्ययन है, जिसके अंतर्गत राज्य अपने राष्ट्रहितों की पूर्ति हेतु शक्ति के आधार पर संघर्षरत रहते हैं। इस संदर्भ में राष्ट्रीय हित अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के प्रमुख लक्ष्य होते हैं। संघर्ष इसका दिशा-निर्देश तय करती है तथा शक्ति इस उद्देश्य प्राप्ति का प्रमुख साधन माना जाता है।

आज 'अंतर्राष्ट्रीय राजनीति' का स्थान इसके व्यापक अवधारणा 'अंतर्राष्ट्रीय संबंधों' ने ले लिया है। इसके अंतर्गत राज्यों के परस्पर संघर्ष के साथ-साथ सहयोगात्मक पहलुओं को भी अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के अंतर्गत शामिल किया जाता है।

1.1 राष्ट्र-राज्यों का उदय *(Rise of Nation–States)*

विगत कुछ वर्षों में विश्व राजनीति के सामान्य धरातल पर महत्त्वपूर्ण परिवर्तनों के बावजूद राष्ट्र-राज्य अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में निरंतर एक महत्त्वपूर्ण इकाई बने हुए हैं। समकालीन विश्व राजनीति में इस इकाई के मौलिक महत्त्व का यह अर्थ नहीं कि केवल यही एकमात्र मौलिक इकाई है। राज्य, बल्कि विशिष्ट रूप से, राष्ट्र-राज्य का खास महत्त्व है, क्योंकि यह मानव इतिहास की वह अवस्था है, जहाँ शक्ति केंद्रित है। राष्ट्र-राज्य की अवधारणा को समझने के लिये आदर्श रूप में 'राष्ट्र' एवं 'राज्य' दोनों के मध्य मूल भेद को जानना ज़रूरी है। 'राष्ट्र' शब्द जिसका प्रयोग बहुधा 'राज्य' के स्थान पर भी कर लिया जाता है, एक ऐसा शब्द है जिसके सांस्कृतिक निहितार्थ हैं। इसका संबंध जनता के उस समूह से होता है, जो एकात्मकता एवं आपसी मूल्यों की भावना से संगठित होते हैं। इसे राजनीति विशेषज्ञ 'कल्पित समुदाय' (Imagined Community) की संज्ञा देते हैं। यह समूह कुछ सांस्कृतिक कारकों पर आधारित होता है, जैसे-समान इतिहास, समान भाषा, समान धर्म, समान सजातीयता एवं समान प्रथाएँ आदि। दूसरी ओर, 'राज्य' शब्द का संबंध राजनीतिक विचार और कानूनी सत्ता दोनों से होता है। तथापि, संयुक्त रूप से 'राष्ट्र-राज्य' शब्द का संबंध 'राष्ट्र' के रूप में एक ऐसी सांस्कृतिक इकाई से होता है, जिसकी सीमाएँ 'राज्य' की राजनीतिक-कानूनी सीमाओं के समान होती हैं। निकोलो मैकियावेली (Niccolo Machiavelli) संभवत: ऐसे पहले राजनीतिक विचारक थे, जिन्होंने अपनी कृति 'द प्रिंस' (The Prince) में आधुनिक राज्य के राजनीतिक सार का वर्णन किया था। वास्तव में यह पुस्तक तत्कालीन इटली के शासकों के लिये एक परामर्श पुस्तिका की भाँति थी, जिसमें सुझाया गया था कि किस प्रकार राज्य की स्थापना एवं उसका संचालन किया जाए। कालांतर में राज्य विद्वेषपूर्ण विश्व में अपने अस्तित्त्व के लिये संगठित साधन तथा अन्य राज्यों की तुलना में विस्तार का उपकरण बन गया। अंतर्राष्ट्रीय कानून के अंतर्गत आधुनिक राज्य निम्नलिखित चार लक्षणों पर आधारित होता है: न्यूनाधिक स्थायी जनसंख्या (Moderate Permanent Population); निश्चित प्रदेश (Certain Territory); संगठित सरकार (Organised Government); तथा प्रभुसत्ता (Sovereignty)।

चूँकि मध्य युग तक राष्ट्र-राज्यों का अस्तित्त्व ही नहीं था, तकनीकी दृष्टि से उस समय से पूर्व अंतर्राष्ट्रीय संबंध भी संभव नहीं थे। तथापि, इस बात के स्पष्टीकरण की कोई आवश्यकता नहीं है कि प्राचीन काल में अंतर्राष्ट्रीय मामलों को उजागर करने वाली राजनीतिक गतिविधियाँ प्रत्यक्ष थीं। हालाँकि अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में राष्ट्र-राज्य व्यवस्था की अवधारणा के उदय के संकेत 1648 की वेस्टफेलिया की संधि (Westphalia Treaty) से मिलते हैं, जिसने यूरोप में तीस वर्षों (1618-1648)

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- अंतर्राष्ट्रीय राजनीति प्रभुसत्ता संपन्न राज्यों की सरकारों के मध्य शक्ति संघर्ष है।
- प्रथम विश्वयुद्ध ने युद्ध एवं यथार्थवाद के सिद्धांत (Principle of War and Realism) के प्रति आकस्मिक प्रतिक्रिया को उत्पन्न किया, जिसने महाशक्तियों की प्रतिद्वंद्विता, शस्त्रीकरण की होड़, गुप्त मैत्री तथा राजनीतिक शक्ति संतुलन पर तार्किक विश्लेषण का अवसर दिया।
- 'शीतयुद्ध' शब्द का प्रयोग तत्कालीन द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद विकसित गहन विद्वेष और तनाव को संबोधित करने के लिये किया जाता है। यह अस्त्र-शस्त्रों का युद्ध न होकर धमकियों तक ही सीमित युद्ध है।
- ट्रूमैन सिद्धांत ने लोगों के आत्मनिर्णय के सिद्धांत को मान्यता दी।
- अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में राष्ट्र राज्य की संकल्पना सर्वप्रथम वेस्टफेलिया की संधि में प्रकट हुई।
- वेस्टफेलिया जर्मनी में उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र है, जो 1815 से 1918 तक प्रशा साम्राज्य का हिस्सा रहा है।
- उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (NATO) अमेरिकी नेतृत्व में एक अंतर्सरकारी सैन्य गठबंधन है।
- NATO में वर्तमान में 29 सदस्य देश हैं। मांटेनेग्रो इस संगठन में शामिल होने वाला 29वाँ राज्य है।
- START (Strategic Arms Reduction Treaty–रणनीतिक शस्त्र कटौती संधि) संयुक्त राज्य अमेरिका एवं रूस के बीच 31 जुलाई, 1991 को हस्ताक्षरित हुई। इसके अंतर्गत दोनों देश परमाणु शस्त्रों के अपने भंडार में कटौती करने को तैयार हुए।

अभ्यास प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

1. राष्ट्र राज्य के उदय में वेस्टफेलिया की संधि महत्त्वपूर्ण रही है। समझाइये।
2. शीतयुद्ध क्या है? द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् विश्व राजनीति पर इसके प्रभाव को सूचीबद्ध कीजिये।
3. ट्रूमैन सिद्धांत एवं मार्शल योजना क्या थी? दोनों में अंतर स्पष्ट कीजिये।
4. क्यूबा मिसाइल संकट ने विश्व को तृतीय विश्वयुद्ध के मुहाने पर ला दिया था। समझाइये।
5. सोवियत संघ के विघटन ने विश्व राजनीति के स्वरूप में मूलभूत बदलाव किया। क्या आप इससे सहमत हैं? स्पष्ट कीजिये।
6. एक ध्रुवीय विश्व व्यवस्था क्या है? विश्व राजनीति पर इसके प्रभाव को स्पष्ट कीजिये।

अध्याय
2

विदेश नीति और संबद्ध मुद्दे
(Foreign Policy & Associated Issues)

किसी राष्ट्र की विदेश नीति को व्यावहारिक बनाने वाली नीति वस्तुत: कूटनीति कहलाती है। अन्य देशों के साथ संबंधों से संबंधित नीति को किसी देश की विदेश नीति कहा जाता है। सामान्यत: विदेश नीति के अंतर्गत राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रसंगों से जुड़े सभी विषयों, जैसे कि शांति, निरस्त्रीकरण, जलवायु परिवर्तन, विकास, न्याय, भूमंडलीकरण आदि के संदर्भ में देशों के मध्य संबंधों के संचालन को शामिल किया जाता है। अन्य शब्दों में, यह वैश्विक मामलों में अपने राष्ट्रीय हितों की तलाश में किसी देश की नीति की रूपरेखा होती है। वस्तुत: एक राष्ट्र-राज्य अपनी विदेश नीति के माध्यम से ही अन्य राज्यों के व्यवहार को नियंत्रित करने का प्रयत्न करता है।

2.1 कूटनीति *(Diplomacy)*

कूटनीति वह राजनीतिक प्रक्रिया है, जिसमें संवादों के माध्यम से दो राष्ट्रों के मध्य पारस्परिक संबंधों की स्थापना एवं उन्हें मधुर बनाने का प्रयत्न किया जाता है। कूटनीति का सारतत्त्व वस्तुत: यथार्थवाद एवं आदर्शवाद के मध्य समन्वय स्थापित करना है। स्पष्ट है कि किसी राष्ट्र द्वारा संधियों, समझौतों अथवा गठजोड़ों को सफल बनाने हेतु अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में किये गए प्रयत्न भी कूटनीति के अंतर्गत शामिल किये जाते हैं।

कूटनीति के उद्देश्य *(Objectives of Diplomacy)*

- विभिन्न राष्ट्र-राज्यों की विदेश नीति में उल्लिखित लक्ष्यों की प्राप्ति का प्रयत्न इस रूप में करना कि अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में शक्ति-संतुलन की स्थापना हो सके।
- अंतर्राष्ट्रीय शांति सुरक्षा तथा स्थायित्व सुनिश्चित करने का प्रयत्न।
- विभिन्न राष्ट्र-राज्यों के पारस्परिक हितों की रक्षा तथा उनमें सहयोग व समन्वय के आयामों में अभिवृद्धि करना।
- कूटनीति के अंतर्गत अब सैन्य संदर्भ भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अत: इसका एक प्रमुख उद्देश्य अब क्षेत्रीय और वैश्विक सैन्य-संतुलन की स्थापना भी माना जाता है।
- राजनीतिक उद्देश्य के अंतर्गत कूटनीति का मुख्य लक्ष्य अपने राजनीतिक प्रभाव का विस्तार कर दूसरे राज्यों पर अपनी मांगें थोपना, उनसे रियायतें प्राप्त करना और समझौता-वार्ता के दौरान अपनी मनमानी शर्तें थोपना होता है।
- कूटनीति के मुख्य गैर-राजनीतिक उद्देश्यों में राष्ट्रों के आर्थिक और व्यापारिक हितों की पूर्ति करना होता है।

कूटनीति बनाम राजनीति

राजनीति सत्ता प्राप्ति का एक उपकरण है, जबकि कूटनीति राजनीतिक उद्देश्यों को प्राप्त करने का एक साधन है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जहाँ राजनीति राष्ट्र की संप्रभुता के संरक्षण को लक्षित करती है, वहीं कूटनीति के अंतर्गत राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय हितों के बीच सामंजस्य स्थापित करने पर बल दिया जाता है।

कूटनीति के अभिकर्त्ता *(Actors of Diplomacy)*

कूटनीति की परिभाषा से ही स्पष्ट है कि कूटनीति अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को संचालित करने का प्रमुख उपकरण है और जैसे-जैसे अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की प्रकृति अथवा स्वरूप में परिवर्तन होता है, वैसे-वैसे कूटनीति के अभिकर्त्ता भी बदलते चले जाते हैं। सोवियत संघ के विघटन ने विश्व को दो ध्रुवीय व्यवस्था से एकध्रुवीय व्यवस्था में बदल दिया और इसका प्रत्यक्ष प्रभाव कूटनीति की प्रकृति एवं स्वरूप पर पड़ा। इसी प्रकार वैश्वीकरण की प्रक्रिया, पारिस्थितिकीय मुद्दों का प्रमुख विषय के रूप में उभरना, आतंकवाद का अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के केंद्र में आना, कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण उदाहरण हैं, जिन्होंने कूटनीति की प्रकृति में व्यापक परिवर्तन किये हैं। इस बिंदु पर यह विश्लेषण अनिवार्य हो जाता है कि आखिर यह परिवर्तन क्या है?

सामान्यत: कूटनीति से आशय दो (द्विपक्षीय) या दो से अधिक (बहुपक्षीय) राष्ट्र-राज्यों के मध्य की जाने वाली वार्ता शृंखलाओं से होता है, लेकिन आधुनिक विश्व में गैर-राज्यीय कारकों की भूमिका भी कूटनीति के अंतर्गत बेहद महत्त्वपूर्ण हो गई है। इनमें कुछ प्रमुख गैर-राज्यीय कारक (Non State Actors) निम्नलिखित हैं-

अध्याय
3

भारत की पूर्व की ओर देखो नीति (India's Look East Policy)

विश्व राजनीति में 1991 कई मायने में अलग था। शीतयुद्ध अभी समाप्त हुआ था। बर्लिन की दीवार के गिरने और सोवियत संघ के विघटन को विश्व में विचारधारा आधारित संघर्ष का अंत माना गया। विश्व में अमेरिका एकमात्र महाशक्ति बचा था। चीन तेज़ी के साथ विकास कर रहा था। अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में आए इन बदलावों के अनुसार देश अपने-आपको ढालने लगे। इसी समय दक्षिण-एशियाई देश भी संरचनात्मक परिवर्तन के दौर से गुज़र रहे थे। वे बाहरी शक्तियों से जुड़ने के लिये सक्रिय एवं बाह्योन्मुखी नीति अपना रहे थे। इन परिवर्तित परिस्थितियों का सामना करते हुए 1991 में भारतीय प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव ने बुलंद एवं स्पष्ट निर्णय लिया जिसे कूटनीति में 'पूर्व की ओर देखो' नीति कहा गया। यह भारतीय विदेश नीति के लिये एक महत्त्वपूर्ण घटनाक्रम माना जाता है। यद्यपि पूर्व की ओर देखो नीति के अंतर्गत व्यापक रूप से एशिया प्रशांत क्षेत्र को शामिल किया जाता है, लेकिन शुरुआती रूप से भारत ने इस नीति के अंतर्गत आसियान के सदस्य देशों को ही शामिल किया था। आसियान का गठन 1967 में किया गया था। इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलीपींस, सिंगापुर, थाईलैंड, ब्रुनेई, वियतनाम, लाओस, म्याँमार तथा कंबोडिया इसके सदस्य हैं। शीतयुद्ध के दौरान आसियान द्वारा भारत को खतरे के रूप में देखा जाता था, क्योंकि भारत सोवियत संघ के साथ गहराई से जुड़ा था तथा एक क्षेत्रीय नौसैन्य शक्ति बनने के लिये अपनी सैन्य क्षमता का विस्तार करने का प्रयास कर रहा था।

इस राजनीतिक परिदृश्य में पूरा एशिया प्रशांत क्षेत्र एक गतिशील आर्थिक क्षेत्र के रूप में उभरा। भारत इस क्षेत्र से लाभ उठाने तथा दक्षिण-पूर्व एशिया में अपने हितों को सुरक्षित करने के लिये प्रतिबद्ध था। आंतरिक कारकों ने भी भारत को नीति संबंधी अलगाव खत्म करने को विवश किया था। 1990 के दशक में भारत स्वयं आर्थिक सुधार कार्यक्रम चला रहा था। इसका प्रमुख कारण भुगतान संतुलन संकट था, जिसने भारत को अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से 1.8 बिलियन डॉलर का ऋण लेने पर विवश किया था। भारत की इस आर्थिक दुर्दशा का प्रमुख कारण वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ एकीकरण में असफलता माना गया। भारत ने तुरंत व्यापक सुधार कार्यक्रम आरंभ किया। ठीक इसी समय दक्षिण-पूर्व एशिया के देश भी अपनी अर्थव्यवस्था को मज़बूत बनाने के लिये नए भागीदारों की खोज कर रहे थे। उनका इरादा आसियान संरचना के अंतर्गत आर्थिक एकीकरण को ठोस रूप देना था। इसके अलावा दो अन्य कारण भी थे जिनकी वजह से भारत-आसियान के बीच संबंधों को बढ़ावा मिला। पहला, आर्थिक मजबूरियों के कारण भारत द्वारा नौसैन्य शक्ति के आधुनिकीकरण में कटौती करना तथा दूसरा, संयुक्त राष्ट्र संघ के नेतृत्व में कंबोडिया में शांति स्थापना का प्रयास करना।

भारत-आसियान के बीच संबंध स्थापित होने से पहले मलेशिया एवं थाईलैंड ने भारत के नौसैन्य आधुनिकीकरण के प्रति चिंता ज़ाहिर की थी। स्वयं थाईलैंड का सैन्य आधुनिकीकरण कुछ हद तक भारत के डर पर आधारित था, लेकिन घटनाक्रमों ने स्थिति में बदलाव लाने का कार्य किया। 1993 में भारत के प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव ने भारत एवं दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच विश्वास का वातावरण बनाने के उद्देश्य से थाईलैंड की आधिकारिक यात्रा की। भारत के दृष्टिकोण से पूर्व की ओर देखो नीति ने न केवल दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ आर्थिक एकीकरण का मौका उपलब्ध कराया, बल्कि भारत की एक सैन्य शक्ति के रूप में पहचान एवं इससे संबंधित दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में व्याप्त भय को भी कम किया।

हालाँकि, भारत ने पूर्व की ओर देखो नीति का सृजन असंगठित रूप से किया था, लेकिन दक्षिण-पूर्व एशिया में अपने हितों की प्राप्ति के लिये भारत इसका निरंतर पालन कर रहा है। भारत यह मानकर चल रहा है कि आने वाले दिनों में आर्थिक एवं अन्य हितों की प्राप्ति दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ एकीकरण के माध्यम से ही की जा सकती है। ज़्यादातर विश्लेषक यह मानते हैं कि यह क्षेत्र विश्व अर्थव्यवस्था का महत्त्वपूर्ण क्षेत्र बना रहेगा। इस कारण अधिकतम लाभ प्राप्ति

अध्याय
4

पड़ोसी देशों के साथ भारत के संबंध (India's Relations with Neighbour Countries)

दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश भारत अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में पड़ोसी देशों के साथ अपने द्विपक्षीय संबंधों को अत्यधिक पहलकारी भूमिका के साथ अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर निभाता रहा है।

4.1 भारत-नेपाल संबंध *(India-Nepal Relations)*

नेपाल एक स्थलारुद्ध (Land locked) अथवा चारों ओर से भूमि से घिरा हुआ देश है। यह हिमालय के दक्षिण की ओर अवस्थित है। चीन और भारत दोनों बड़े एशियाई देशों के साथ इसकी सीमाएँ लगती हैं। पूर्व, पश्चिम और दक्षिण में भारत से, उत्तर में तिब्बत प्रांत (चीन) से घिरे नेपाल को भारत और चीन के बीच एक मध्यवर्ती राज्य (Buffer State) माना जाता है। नेपाल का क्षेत्रफल 56,827 वर्ग मील और जनसंख्या लगभग 3 करोड़ है।

द्विपक्षीय संबंधों का ऐतिहासिक परिदृश्य *(Historical Perspective of Bilateral Relations)*

नेपाल में भारत की रुचि धार्मिक, ऐतिहासिक, रणनीतिक एवं सांस्कृतिक कारणों से स्वाभाविक थी। ब्रिटिश सेना के लिये नेपाल में गोरखा जवानों की भर्ती सन् 1947 तक जारी रही। चीन में सन् 1949 में साम्यवादी क्रांति की सफलता से यह स्पष्ट हो गया था कि वह तिब्बत पर अपना वर्चस्व स्थापित करेगा जिससे चीन, नेपाल की सीमा को स्पर्श करने लगेगा। चीन में साम्यवादियों के सत्ता में आ जाने के फलस्वरूप अमेरिका, नेपाल के मामलों में दिलचस्पी लेने लगा। उत्तर में भारत की सुरक्षा नेपाल की सुरक्षा से जुड़ी हुई थी। इसी बीच नेपाल में संविधान निर्माण की मांग उठाई जाने लगी थी।

नेपाल में जिस संविधान का प्रारूप तैयार किया गया, वह राणा परिवार के निहित स्वार्थों के विरुद्ध था, इसलिये उन्होंने इसे लागू नहीं होने दिया। नेपाली कॉन्ग्रेस देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था कायम कराने के लिये आंदोलन चला रही थी। भारत की कॉन्ग्रेस पार्टी की स्वाभाविक सहानुभूति नेपाल के लोकतांत्रिक आंदोलन के साथ थी। भारत और नेपाल के बीच प्रस्तावित मैत्री संधि पर सन् 1949 तक हस्ताक्षर नहीं हो सके, क्योंकि राणाओं ने भारत द्वारा सुझाई गई नेपाली सरकार की लोकतांत्रिक संरचना का विरोध किया था।

भारत-नेपाल संबंध (1947-62)

ब्रिटिश काल के दौरान यद्यपि नेपाल औपचारिक रूप से एक स्वतंत्र देश था तथापि नेपाल की राजनीति में ब्रिटिश शासकों का हस्तक्षेप बहुत अधिक था। स्वतंत्र भारत की सरकार साम्राज्यवादी न होते हुए भी सामरिक महत्त्व के कारण नेपाल की अनदेखी नहीं कर सकती थी। इसके अतिरिक्त साम्यवादी चीन का तिब्बत में प्रभाव बढ़ जाने से यह स्पष्ट हो गया था कि यह साम्यवादी राष्ट्र तिब्बत पर अपना अधिकार जमा लेगा और इस प्रकार नेपाल एवं चीन की सीमाएँ मिल जाएंगी। संयुक्त राज्य अमेरिका भी इसी कारण नेपाल की राजनीति में रुचि लेने लगा। इस प्रकार नेपाल को लेकर बड़ी अंतर्राष्ट्रीय शक्तियों के बीच टकराव की स्थिति उत्पन्न हो गई और ऐसा प्रतीत होने लगा कि नेपाल शीतयुद्ध का क्षेत्र बन जाएगा। अपनी सुरक्षा की दृष्टि से भारत सरकार ऐसी स्थिति में नेपाल की राजनीति से अलग नहीं रह सकती थी। अतएव शुरुआत से ही भारत सरकार ने नेपाल की राजनीतिक एवं आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने की नीति अपनाई।

भारत सरकार नेपाल के साथ एक संधि करना चाहती थी। सन् 1949 में संधि का मसविदा भी तैयार किया गया परंतु इसका कोई अंतिम निष्कर्ष नहीं निकला क्योंकि नेपाल सरकार भारत के प्रति शंकालु थी। संधि का महत्त्वपूर्ण प्रावधान यह था कि नेपाल में लोकतांत्रिक प्रणाली बहाल हो। चूँकि नेपाल के तत्कालीन प्रधानमंत्री राणा मोहन शमशेर जंग बहादुर नेपाल के परंपरागत प्रधानमंत्रियों के प्रसिद्ध वंश राणा परिवार के थे और राजा की संपूर्ण सत्ता वर्षों से इस राणा परिवार के हाथ में थी, अतएव राणा मोहन शमशेर जंग बहादुर लोकतांत्रिक पद्धति का समर्थन नहीं कर पाए।

तिब्बत में चीनी गतिविधियाँ बढ़ने से नेपाल की सुरक्षा भारत के लिये चिंतनीय विषय हो गई। 17 मार्च, 1950 को प्रधानमंत्री नेहरू ने संसद में कहा कि नेपाल पर कोई भी संभावित आक्रमण निश्चित रूप से भारत की सुरक्षा के लिये खतरा होगा। 31 जुलाई, 1950 को दोनों देशों के मध्य एक संधि हुई, पर इसी बीच नेपाल में घटित घटनाओं के कारण भारत सरकार और नेपाल की राणा सरकार के संबंधों में विवाद उत्पन्न हो गया।

अध्याय
5

भारत-पश्चिम एशिया एवं मध्य एशिया (India–West Asia and Central Asia)

पश्चिम एशिया शब्द का प्रयोग अक्सर मध्य-पूर्व शब्द के साथ कर दिया जाता है, जो कि उचित नहीं है। मध्य-पूर्व में आमतौर पर मिस्र और कभी-कभी उत्तरी अफ्रीका के अन्य भागों को शामिल किया जाता है। लेकिन काकेशस क्षेत्र को इससे बाहर रखा जाता है। पश्चिम एशिया में काकेशस राष्ट्र तो शामिल होते हैं लेकिन मिस्र और उत्तरी अफ्रीका को शामिल नहीं किया जाता है। इसलिये ये दोनों प्रायः ओवरलैप करते हैं, लेकिन वे बिल्कुल समान नहीं हैं। पश्चिम एशिया के अंतर्गत कई महत्त्वपूर्ण देश आते हैं जो वैश्विक राजनीति में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। टर्की, संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, इज़रायल, इराक, ईरान, कतर, ओमान, कुवैत, जोर्डन, लेबनान, सीरिया, अजरबैजान आदि इस क्षेत्र के महत्त्वपूर्ण देश हैं।

मध्य एशिया, एशिया का मध्य क्षेत्र है जो पश्चिम में कैस्पियन सागर से लेकर पूर्व में चीन की पश्चिमी सीमा तक फैला हुआ है। मध्य एशिया के उत्तर में रूस स्थित है। वहीं इसका दक्षिणी भाग ईरान, अफगानिस्तान तथा चीन से घिरा हुआ है। मध्य एशिया के अंतर्गत कजाखस्तान, उज़्बेकिस्तान, ताजिकिस्तान, किर्गिज़स्तान और उज़्बेकिस्तान शामिल हैं। ये सभी देश पूर्व सोवियत गणराज्य का भाग रहे हैं। मध्य एशियाई देश 1990 के दशक में स्वतंत्र हुए।

5.1 भारत और पश्चिम एशिया *(India and West Asia)*

पश्चिम एशिया के साथ भारत के संबंधों का आकलन करने से पहले पश्चिम एशिया का सूक्ष्म अनुरेखण करने की आवश्यकता है। यह एशिया का सबसे पश्चिमी उपक्षेत्र (वेस्टर्नमोस्ट सब-रीजन) है जिसे ब्रिटिश साम्राज्यवाद के दौर में 'मध्य-पूर्व' (मिडिल ईस्ट) कहा जाता था, जो आज भी चलन में है। लेकिन सच बात तो यह है कि पश्चिम या मध्य-पूर्व जैसे विशेषणों की सार्थकता इस बात पर निर्भर है कि हमारी भौगोलिक स्थिति क्या है या हम उसे कहाँ से देख रहे हैं? दूसरे शब्दों में कहें तो पश्चिमी यूरोप के लिये यह क्षेत्र सही अर्थों में मध्य-पूर्व होगा लेकिन हम दक्षिण एशियाइयों के लिये यह पश्चिम एशिया ही होगा। बहरहाल, लगभग 300 मिलियन आबादी वाले इस क्षेत्र में प्राचीन नामावली के तहत लैवेंट, मेसोपोटामिया, अनातोलिया, फारस, आर्मीनियन उच्च-भूमि, दक्षिण काकेशस और अरब व सिनाई प्रायद्वीप शामिल हैं जबकि वर्तमान समय में आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन (ओईसीडी) इसमें बहरीन, ईरान, इराक, इज़रायल, जॉर्डन, कुवैत, लेबनान, ओमान, कतर, फिलिस्तीनी राज्यक्षेत्र, सऊदी अरब, सीरिया, तुर्की, संयुक्त अरब अमीरात तथा यमन को शामिल मानता है। हालाँकि, यहाँ पर विषय यह नहीं है कि इस भू-क्षेत्र में कौन-कौन से देश आते हैं बल्कि मूल विषय यह है कि इस क्षेत्र की असल चुनौती क्या है और भारत उसे देखते हुए किस तरह की भूमिका निभा पा रहा है? पश्चिम एशिया के साथ भारत के गहन ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सभ्यतागत रिश्ते रहे हैं।

पश्चिम एशिया अथवा मध्य-पूर्व को प्रायः भू-राजनीतिक गतिविधियों के केन्द्र के रूप में देखा गया है, जिससे पिछले कुछ दशकों में चरमपंथ और आतंकवाद इस कदर जुड़ गया कि अब इसे एक अशांत और हिंसक क्षेत्र के रूप में देखा जा रहा है। कुछ विश्लेषकों के अनुसार, यह अशांति सामान्य तौर पर तो वाशिंगटन की जटिल रणनीति का नतीजा हो सकती है लेकिन वास्तविकता में इसमें बहुत से कारकों का योगदान है, जिनमें नृजातीयता, धार्मिक उन्माद, वहाँ के शासक वर्ग की महत्त्वाकांक्षाएँ इत्यादि को शामिल किया जा सकता है। चूँकि मध्य-पूर्व में विद्यमान तनावों की जड़ें इतिहास और राजनीति में निहित हैं, इसलिये इन्हें पूरी तरह से समाप्त कर पाना फिलहाल तो नामुमकिन है। हाँ, वर्तमान समय में कट्टरपंथ/आतंकी ताकतों का जो उभार देखने को मिल रहा है, उस पर नियंत्रण स्थापित किया जा सकता है।

पश्चिम एशिया में शांति की जिन आहटों को इस समय महसूस किया जा रहा है, उसके लिये किन्हीं परिणामी निष्कर्षों तक पहुँचने से पहले पश्चिम एशिया में निहित कारकों एवं महाशक्तियों द्वारा खेले गए 'ग्रेट-गेम्स' पर एक निगाह डालने की ज़रूरत होगी। पश्चिम एशिया की वर्तमान स्थिति के लिये जो कारण उत्तरदायी हैं, उनमें पहला है उसकी वर्तमान संरचना, जिसका निर्माण प्रथम विश्वयुद्ध के अंत में औपनिवेशिक शक्तियों द्वारा किया गया था। ब्रिटिशों और फ्राँसीसियों ने जिन राष्ट्रों का निर्माण किया वे ऐसे हताश समूह थे, जिन्हें एक राष्ट्र के रूप में शासित होने का कोई अनुभव नहीं था। यही नहीं, इन राष्ट्रों का निर्माण करने से पूर्व कोई व्यवस्थित विचार-विमर्श भी नहीं किया गया था, उदाहरणार्थ- ऑटोमन साम्राज्य

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS
YouTube Drishti IAS
drishtiias
drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456